

डॉ. रॉबर्ट पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 15, मूल पाप, रोमियों 5:12-19, जारी

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 15 है, मूल पाप, रोमियों 5:12-19, जारी।

पाप के सिद्धांत के हमारे अध्ययन में आपका स्वागत है।

हम टेक्स्टस क्लासिकस के रोमियों में बड़े संदर्भ के साथ काम कर रहे हैं, रोमियों 5:19, 12 से 19। और आइए हम ऐसा करने से पहले प्रभु की तलाश करें। पिता, आपके वचन के लिए, आपकी आत्मा के लिए, ईसाई संगति के लिए धन्यवाद।

हमें आशीर्वाद दें, हमें प्रोत्साहित करें, हमें सिखाएँ, और हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा प्रार्थना करते हैं। आमीन।

हमने कहा है कि रोमियों 1:16 और 17, उसमें पौलुस रोमियों की पुस्तक के विषय की घोषणा करता है, जो कि सुसमाचार है, परमेश्वर की उद्धारकारी धार्मिकता का प्रकाशन है।

हालाँकि, तुरंत ही, वह 1:18 से 3:20 तक परमेश्वर के क्रोध के प्रकटीकरण की चर्चा शुरू कर देता है। 3:21 में, पौलुस उस उद्देश्य कथन में घोषित विषय पर लौटता है, परमेश्वर की उद्धारकारी धार्मिकता का प्रकटीकरण। पौलुस कहता है, अब परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था से अलग प्रकट हुई है।

इसका मतलब यह है कि यह बचाने वाली धार्मिकता मानवीय योग्यता से बिलकुल अलग है। फिर भी, यह पुराने नियम के वादों की पूर्ति है। व्यवस्था से अलग, हालाँकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता इसकी गवाही देते हैं, पौलुस खुद को पकड़ लेता है ताकि बाइबल के खिलाफ़ बोलने के लिए उसे गलत न समझा जाए।

व्यवस्था का पहला प्रयोग मानवीय योग्यता की बात करता है, लेकिन अब परमेश्वर की धार्मिकता, परमेश्वर की उद्धारकारी धार्मिकता, व्यवस्था और किसी भी योग्यतापूर्ण धारणा से अलग, प्रकट हुई है, हालाँकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता इसकी गवाही देते हैं। यह धार्मिकता उन सभी लोगों द्वारा अपनाई जाती है जो मसीह में अपना विश्वास रखते हैं। यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की धार्मिकता उन सभी के लिए है जो विश्वास करते हैं।

विश्वास के स्थान पर ज़ोर देना ज़रूरी है। उद्देश्य कथन में पहले से ही कहा गया है कि मैं सुसमाचार से शर्मिंदा नहीं हूँ, और यह हर उस व्यक्ति के लिए उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है जो विश्वास करता है, चाहे वह यहूदी हो या गैर-यहूदी। क्योंकि इसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से विश्वास तक प्रकट होती है।

जैसा कि लिखा है, धर्मी लोग विश्वास से जीवित रहेंगे। इसलिए कम से कम तीन बार, इस बात पर बहस हुई है कि विश्वास से विश्वास तक की भाषा का क्या अर्थ है, शायद विश्वास से विश्वास तक, पहले से आखिरी तक, कुछ ऐसा ही। लेकिन जैसे ही वह 3:21 में उस विषय पर वापस आता है, तो वह कहता है, यह धार्मिकता, यह बचाने वाली धार्मिकता, जो कानून-पालन से अलग है, लेकिन पुराने नियम में गवाही दी गई है, यह उन सभी के लिए यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से है जो विश्वास करते हैं।

और रोमियों 4 रोमियों में विश्वास का महान अध्याय है। इसलिए, किसी भी तरह से पॉल विश्वास की आवश्यकता को कम नहीं कर रहा है। क्योंकि इसमें कोई भेद नहीं है।

उद्धार उन सभी के लिए मसीह में विश्वास के माध्यम से है जो विश्वास करते हैं, क्योंकि इसमें कोई भेदभाव नहीं है। क्योंकि सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

शायद यहाँ काल में अंतर आदम के पाप और फिर मनुष्यों के वास्तविक पाप की बात करता है। क्योंकि सभी ने पाप किया है, भूतकाल, और कमतर, यह एक प्रगतिशील हो सकता है, यह एक वर्तमान है, परमेश्वर की महिमा का एक प्रगतिशील विचार हो सकता है। और मसीह यीशु में छुटकारे के माध्यम से एक उपहार के रूप में उसकी कृपा से उचित ठहराया जाता है।

इस मामले में इंसानों में कोई अंतर नहीं है। सभी ने पाप किया और लगातार परमेश्वर से मिलने वाली प्रशंसा पाने से चूक गए। डग मू, अपनी रोमन टिप्पणी में, उन दो काल की व्याख्या से सहमत हैं।

पद 24 पद 22 के विचार को आगे बढ़ाता है। वे सभी जो विश्वास करते हैं और उसके अनुग्रह से मुफ्त में धर्मी ठहराए जाते हैं। फिर पौलुस रोमियों 3, 24 से 26 में धर्मी ठहराए जाने के आधार या आधार प्रस्तुत करता है।

यह मसीह का प्रायश्चित है। पौलुस ने पद 24 में यीशु की प्रायश्चित मृत्यु को छुटकारे के रूप में प्रस्तुत किया है, लेकिन पद 25 और 26 में मुख्य रूप से प्रायश्चित के रूप में। उसने केवल छुटकारे का उल्लेख किया है, लेकिन उसने प्रायश्चित की व्याख्या की है।

परमेश्वर अपने प्रिय पुत्र की मृत्यु में अपना न्याय प्रदर्शित करता है। जो लोग विश्वास करते हैं, वे मसीह यीशु में छुटकारे के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह के उपहार के रूप में धर्मी ठहराए जाते हैं। मसीह यीशु, जिसे परमेश्वर ने अपने लहू के द्वारा प्रायश्चित के रूप में प्रस्तुत किया, ताकि विश्वास के द्वारा प्राप्त किया जा सके।

यह ईश्वरीय सहनशीलता है। उसने पिछले पापों को अनदेखा कर दिया था। यह वर्तमान समय में उसकी धार्मिकता को दिखाने के लिए था ताकि वह न्यायी हो सके और यीशु में विश्वास करने वाले को न्यायी ठहरा सके।

औचित्य का आधार मसीह का कार्य है जिसे छुटकारे के रूप में माना जाता है, पद 24, लेकिन मुख्य रूप से यहाँ प्रायश्चित के रूप में। हम वास्तविक मूल पाप के अंश में देखेंगे कि यह मसीह

का उद्धार करने वाला कार्य है जिसे धार्मिकता के रूप में चित्रित किया गया है, धार्मिकता को प्राप्त करना, विशेष रूप से उसके बलिदान में। परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र की मृत्यु में अपना न्याय प्रदर्शित किया।

पुराने नियम के समय में, परमेश्वर ने मसीह के प्रायश्चित की संभावना में विश्वासियों को क्षमा कर दिया। रोमियों 3:25 में कहा गया है कि परमेश्वर की दिव्य सहनशीलता में, उसने पिछले पापों को अनदेखा कर दिया था। पुराने नियम के समय में, परमेश्वर ने मसीह के प्रायश्चित की संभावना में विश्वासियों को क्षमा कर दिया।

पशु बलि सुसमाचार की एक तस्वीर थी, लेकिन अपने आप में, उन्होंने पाप को दूर नहीं किया। उन्होंने पाप को दूर किया क्योंकि, जैसा कि इब्रानियों ने हमें सिखाया है, इब्रानियों 9 और 15 में, मसीह के बलिदान का उपयोग पुराने नियम के तहत पापों के लिए किया गया था। यह आश्चर्यजनक है।

परमेश्वर ने मसीह के प्रायश्चित की आशा में पापियों और विश्वासियों को क्षमा किया। उसने अभी तक मसीह के बलिदान के द्वारा पाप को दूर नहीं किया था। अब, समय की परिपूर्णता में, परमेश्वर ने मसीह को उसके बलिदानपूर्ण मृत्यु, उसके लहू में प्रायश्चित के रूप में प्रस्तुत किया।

भगवान ने अपने बेटे पर अपना क्रोध उंडेला, जिसने पापियों के योग्य दण्ड उठाया। नए नियम में प्रायश्चित के अधिक विस्तृत प्रस्तुतीकरण के लिए, लियोन मॉरिस, द अपोस्टोलिक प्रीचिंग ऑफ द क्रॉस देखें। इसके अलावा, डीए कार्सन के पास फेस्टशिफ्ट पर एक अध्याय है, जो गॉर्डन कॉनवेल में उन सभी वर्षों में एक धर्मशास्त्री के लिए एक उत्सव की मात्रा है।

रोजर निकोल, रोजर निकोल के लिए, प्रायश्चित की महिमा, क्रूस की महिमा, कुछ ऐसा ही। कार्स्टन के पास रोमियों 3:24, 26 की व्याख्या है। यह सुंदर है।

इस तरह, परमेश्वर ने अपनी नैतिक अखंडता को बनाए रखा ताकि वह न्यायी हो और फिर भी पापियों को न्यायोचित ठहरा सके। यहाँ सुसमाचार का चमत्कार है। समस्या यह नहीं है कि उद्धार न पाने वाले लोग क्या कल्पना करते हैं।

एक प्रेममय परमेश्वर किसी को कैसे दण्डित कर सकता है? इसका उत्तर बाइबल के अनुसार सरल है। बाइबल का तीसरा अध्याय और रोमियों के पहले तीन अध्याय हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर आसानी से संसार की निंदा कर सकता है। बाइबल की समस्या यह है कि परमेश्वर अपने पवित्र चरित्र को कैसे बनाए रख सकता है और फिर भी किसी को कैसे बचा सकता है।

यही समस्या है। परमेश्वर पापियों का न्याय कैसे कर सकता है? कोई समस्या नहीं। वे इसके लायक हैं, और वह पवित्र और न्यायी है।

समस्या यह है कि वह कैसे पवित्र और न्यायी हो सकता है और किसी को बचा सकता है। इस समस्या का उत्तर, निश्चित रूप से, स्वयं परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया है। यह मसीह की

प्रायश्चित मृत्यु के कारण है। यीशु परमेश्वर की प्रकृति की धार्मिक माँगों को पूरा करने के लिए प्रायश्चित के रूप में मरा।

इसलिए, जो यीशु में विश्वास करता है, उसे न्यायी ठहराने के लिए हम इस प्रस्तुति में विश्वास को कम नहीं करते हैं। हम विश्वास को स्थापित करते हैं।

विश्वास उतना ही अच्छा है जितना उसका उद्देश्य। उचित उद्देश्य मसीह की मृत्यु है, जिसे प्रायश्चित के रूप में माना गया था। रोमियों 3:25, 26 उद्धारकारी धार्मिकता के रूप में।

रोमियों 5:18 और 19. अध्याय 3 का शेष भाग उद्धार के संबंध में मानवीय उपलब्धि के बारे में घमंड को बाहर करता है। लोगों को विश्वास से उचित ठहराया जाता है, न कि मानवीय प्रयास से।

श्लोक 27 और 28. फिर पौलुस परमेश्वर की एकता पर आधारित तर्क का उपयोग करके यह दिखाता है कि यहूदी और अन्यजाति एक ही तरह से बचाए जाते हैं। या परमेश्वर केवल यहूदियों का परमेश्वर है? अध्याय 3 का श्लोक 29. क्या वह अन्यजातियों का भी परमेश्वर नहीं है? हाँ, अन्यजातियों का भी।

परमेश्वर वह है जो विश्वास के द्वारा खतना किए हुआओं को धर्मी ठहराता है और विश्वास के द्वारा खतना रहितों को भी धर्मी ठहराता है। तो क्या हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को उलट देते हैं? बिलकुल नहीं। इसके विपरीत, हम व्यवस्था को कायम रखते हैं।

पद 31 में, प्रेरित एक संभावित गलतफहमी से सावधान रहता है जब वह कानून को रद्द करने के बजाय उसे बनाए रखने का दावा करता है। अध्याय 4 सावधानी से औचित्य के साधनों को बताता है। केवल मसीह में विश्वास।

रोमियों 5:1, अध्याय 5 इस मुफ्त औचित्य के लाभों को प्रस्तुत करता है। परमेश्वर के साथ वस्तुनिष्ठ शांति। इसलिए, जब से हम विश्वास से न्यायसंगत ठहराए गए हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से हमें परमेश्वर के साथ शांति है।

पद 1. पद 11 में यहाँ एक समावेश है। उससे भी बढ़कर, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर में आनन्दित होते हैं, जिसके द्वारा अब हमें मेल-मिलाप प्राप्त हुआ है, जिसका अर्थ है शांति स्थापित करना। औचित्य का आशीर्वाद परमेश्वर के साथ शांति है।

पद 1 और 11. भविष्य की महिमा की आशा। पद 2 से 5. मसीह के द्वारा, अब हम विश्वास के द्वारा उस अनुग्रह तक पहुँच गए हैं जिसमें हम खड़े हैं, और हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित हैं।

इतना ही नहीं, बल्कि हम यह जानकर खुश होते हैं कि दुख सहनशीलता को जन्म देता है। सहनशीलता चरित्र को जन्म देती है, और चरित्र आशा को जन्म देता है। पॉल के विचार को समझने के लिए हमें पंक्तियों के बीच पढ़ना होगा।

जब मसीही लोग धीरज धरते हैं और प्रभु पर भरोसा करते हुए कष्ट सहते हैं, तो वह उनका निर्माण करता है, और उन्हें स्थिर व्यक्ति बनाता है। और जब वे अपने जीवन में परमेश्वर को काम करते हुए देखते हैं और जो वे देख सकते हैं, तो इससे भविष्य में महिमा के उसके वादे की आशा बढ़ती है, जिसे वे अभी नहीं देख सकते। और इसके अलावा, रोमियों के अध्याय 5 की आयत 5।

यह आशा हमें निराश नहीं करती क्योंकि परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में डाला गया है जो हमें दिया गया है। औचित्य और परमेश्वर के साथ शांति के लाभ। रोमियों 5:1 और 11.

भविष्य की महिमा की आशा। 2 से 5. और अनंत सुरक्षा। श्लोक 6 से 10.

जब हम सही समय पर कमजोर थे, तो मसीह ने अधर्मियों के लिए अपनी जान दे दी। क्योंकि कोई धर्मी व्यक्ति के लिए तो शायद ही मरे, परन्तु किसी भले व्यक्ति के लिए तो कोई मरने का साहस भी कर सकता है। मनुष्य जाति में यह बिलकुल भी सुनने में नहीं आता कि कोई अपने मित्रों के लिए मरे, परन्तु यह बिलकुल सुनने में नहीं आता कि कोई अपने शत्रुओं के लिए मरे।

लेकिन परमेश्वर इस तरह से हमारे लिए अपना प्रेम प्रदर्शित करता है। जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरा। फिर, वह दो बार यहूदी तर्क का इस्तेमाल करता है।

अगर भगवान ने कठिन काम किया है, तो वह आसान काम भी करेगा। वह इसे कुछ संक्षिप्तीकरण के साथ औचित्य के संदर्भ में करता है। वह इसे सुलह के संदर्भ में करता है, इसे पूरी तरह से सामने रखता है।

इसलिए, अब जब हम उसके लहू के कारण धर्मी ठहराए गए हैं, तो परमेश्वर ने पापियों को धर्मी ठहराया है। और भी अधिक, यह यहूदी तर्क की कुंजी है कि कठिन से आसान की ओर, हम परमेश्वर के क्रोध से और भी अधिक उसके द्वारा बचाए जाएँगे। हे भगवान! जब हम दोषी ठहराए गए, तो परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया।

अब जबकि हम न्यायसंगत ठहराए गए हैं, हम बचाए जाएँगे। उद्धार की तस्वीर का उपयोग करते हुए ठीक यही तर्क मेल-मिलाप कहलाता है। क्योंकि अगर हम दुश्मन थे, तो सबसे कठिन बात यह है कि हम उसके बेटे की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं।

वाह! परमेश्वर ने मसीह के प्रायश्चित के माध्यम से शत्रुओं को अपना मित्र बना लिया। अब जबकि हम मेल-मिलाप कर चुके हैं, तो क्या हम उसके जीवन से बच जाएँगे। यदि परमेश्वर ने अपने और अपने शत्रुओं के बीच तथा उनके और अपने बीच शांति स्थापित की है, तो अब जबकि हम उसके शत्रु नहीं रहे, वह हमें बचाए रखेगा।

इससे भी बढ़कर, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर में आनन्दित होते हैं, जिसके माध्यम से हमने अब मेल-मिलाप प्राप्त किया है, जैसा कि हमने पहले बताया था। तो फिर, हम अंततः अपने अंश पर कैसे पहुँचते हैं: रोमियों 5:12 से 21, महान मूल पाप पाठ, इस पैटर्न में कैसे फिट बैठता है? मेरा प्रस्ताव है कि यहाँ पौलुस, औचित्य के अपने विचार-विमर्श के अंत में, मसीह

के उद्धार कार्य को प्रस्तुत करता है, जैसा कि उसने औचित्य के आधार की अपनी प्रस्तुति की शुरुआत में किया था। 3, 24, 25 में, पौलुस ने समझाया कि यीशु एक प्रायश्चित के रूप में मरा।

यहाँ, वह विश्वासियों के लिए धार्मिकता को सुरक्षित करने के लिए मर गया। अध्याय 5 की आयत 18 में धार्मिकता के एक कार्य का उल्लेख है। 3:24, 26 में, पौलुस ने प्रायश्चित के नकारात्मक पक्ष, क्रोध को दूर करना, नकारात्मक घटाना, दूर करना बताया।

फिर, 5:12 से 21 में, वह सकारात्मक पक्ष देता है, मसीह द्वारा धार्मिकता की प्राप्ति, दूर हटना, क्रोध को टालना, धार्मिकता प्रदान करना। यदि यह विश्लेषण संदर्भ में सही है, तो रोमियों 5:12 से 21 मूल पाप के बारे में नहीं है। यह औचित्य के आधार के रूप में मसीह की उद्धारक धार्मिकता के बारे में है।

और फिर भी, ये आयतें सिखाती हैं कि आदम के पाप का मानव जाति पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। और इसलिए, औचित्य के विषय के अंतर्गत, यह मूल पाप का एक उल्लेखनीय विवरण है। रोमियों 1:19 से 5:21 के तर्क के इस सारांश को ध्यान में रखते हुए, अब हम रोमियों 5, 12 से 19 की व्याख्या करने के लिए तैयार हैं।

यह बाइबल में मूल पाप के विषय पर एक अंश है। यह घटना उत्पत्ति 3 में दर्ज की गई थी। इसके परिणाम पुराने और नए नियम में हैं, लेकिन यहाँ मूल पाप के धर्मशास्त्र के बारे में बाइबल का एकमात्र स्पष्ट उपचार है। इसके परिणाम इफिसियों 2:1 से 4 और इसी तरह अन्य स्थानों में निहित हैं।

इफिसियों 5:12. इसलिए, जैसे पाप एक मनुष्य अर्थात् आदम के द्वारा संसार में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई क्योंकि सबने पाप किया, इसलिए यह आवाज़ इसलिए उठती है क्योंकि पौलुस ने विरोधाभास शुरू किया और उसे पूरा नहीं किया। वह इसे 5, 18 और 19 तक पूरा नहीं करता।

जैसे पाप एक मनुष्य के द्वारा संसार में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस प्रकार मृत्यु सभी मनुष्यों में फैल गई क्योंकि सभी ने पाप किया, मैं उसके लिए इसे पूरा करूँगा। इसी प्रकार, धार्मिकता और जीवन एक मनुष्य, यीशु मसीह के द्वारा प्रकट हुए हैं। वह अभी ऐसा नहीं कहता, लेकिन कुछ ऐसा ही है जहाँ उसका इरादा था।

उनका विचार टूट गया। हर टिप्पणीकार इसे सही कहता है। यह श्लोक एक चिआस्टिक संरचना का अनुसरण करते हुए दो भागों में टूटता हुआ प्रतीत होता है।

एक, पाप, ए, और बी, मानव जाति में मृत्यु की उपस्थिति, और दो, मृत्यु, बी प्राइम, और पाप, ए प्राइम, की मानव जाति के बीच सार्वभौमिकता। जैसे पाप, ए, एक आदमी के माध्यम से दुनिया में आया, और मृत्यु, बी, पाप के माध्यम से, और इसलिए मृत्यु, बी प्राइम, सभी मनुष्यों में फैल गई क्योंकि सभी ने पाप किया, ए प्राइम। इस श्लोक में तुलनात्मक खंड के अगर-खंड, प्रोटैसिस, के बिना तब-खंड शामिल है।

यदि-खण्ड, प्रोटैसिस, फिर-खण्ड, अपोडोसिस। इसमें अपोडोसिस के बिना प्रोटैसिस है, जैसा कि श्लोक 15, 18, 19 और 21 से तुलना करके आसानी से देखा जा सकता है, जिसे हम विस्तार से करेंगे। वे अंश प्रक्रिया में होस या होस्पर और हट्स काई का उपयोग करते हैं; वे यदि-खण्ड में जैसा या बस जैसा प्रयोग करते हैं, और फिर-खण्ड में तो या इसलिए इसलिए।

इसलिए, यह वाक्यांश कुछ भी समान नहीं है; गलत ग्रीक जानकारी देने जैसा कुछ भी नहीं है। यह अच्छा विचार नहीं है। सावधान रहें।

हाँ, यह dia से शुरू होता है टूटा, इसलिए, वाक्यांश डाय टूटा या तो कारणात्मक है, जो संगत के लिए आधार तैयार करता है, अगले शब्दों के लिए, पिछले वाले को संदर्भित करके, या फिर इलेटिव है, जो पिछले वाले से एक अनुमान प्रस्तुत करता है। मैं वास्तव में एक जबरदस्त निबंध पर भरोसा कर रहा हूँ, एस. लुईस जॉनसन, रोमियों 5:12, एक अभ्यास व्याख्या और धर्मशास्त्र में, न्यू डाइमेंशन इन न्यू टेस्टामेंट स्टडी नामक पुस्तक में, रिचर्ड लॉंगनेकर और मेरिल टेनी द्वारा संपादित। यह जानना मुश्किल है कि क्या यह वाक्यांश, इसलिए, 1:18 में शुरू होने वाले पूरे तर्क को संदर्भित करता है, या केवल 5:1-11 को।

मैं 5:1-11 का हवाला दूंगा, जो बदले में वापस संदर्भित करता है। तुलनात्मक खंड ठीक उसी समय शुरू होता है जब पाप एक आदमी के माध्यम से दुनिया में प्रवेश करता है; संदर्भ आदम और आदिम पाप का है। मैं शब्दकोश, 446, जॉनसन, 302, और क्रैनफील्ड, इंटरनेशनल क्रिटिकल कमेंट्री से सहमत हूँ, कि यहां दुनिया का अर्थ मानव जाति के रूप में दुनिया है।

रोमियों 3:6, और 19, और 5:13 में संसार के समान प्रयोग पाए जाते हैं। आदम के पाप के माध्यम से, पाप, एक घुसपैठिए के रूप में मानव जाति की दुनिया में प्रवेश कर गया। अगला खंड अण्डाकार है, और मृत्यु ने पाप के माध्यम से दुनिया में प्रवेश किया।

आदम दुनिया में पाप के प्रवेश के लिए जिम्मेदार था। आदम के पाप के माध्यम से मृत्यु ने दूसरे घुसपैठिए के रूप में प्रवेश किया। एंडर्स न्यग्रेन लिखते हैं, उद्धरण, पाप और मृत्यु दुनिया में अत्याचारी के रूप में हैं, इसे कहने का एक शक्तिशाली तरीका है, जो किसी व्यक्ति से यह नहीं पूछते कि वह उनकी सेवा करेगा या नहीं, बल्कि स्वचालित रूप से शासन करते हैं।

और इसलिए, मृत्यु सभी मनुष्यों के लिए आई। और इसलिए, नीचे कुछ बार भ्रमित न हों, यह पहले मनुष्य के पाप के माध्यम से मानव जाति में प्रवेश करने वाले दो घुसपैठियों के परिणामस्वरूप परिणाम या तरीके को दर्शाता है। मृत्यु सभी मनुष्यों के लिए एक अमित्र आगंतुक के रूप में आई।

आदम के पाप के प्रभाव के कारण सभी मनुष्य मर गए। श्लोक 12 का निष्कर्ष है क्योंकि सभी ने पाप किया। क्रैनफील्ड और जॉनसन, यही वह लेख है जिसका मैंने उल्लेख किया है, एस. लुईस जॉनसन, 303 और 305, दृढ़तापूर्वक तर्क देते हैं कि पूर्वसर्ग का अनुवाद क्योंकि किया जाना चाहिए।

इस आयत का अर्थ इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। वैसे, इस खंड के अर्थ को लेकर पूर्वी और पश्चिमी चर्चों के बीच बहुत बड़ा मतभेद है। संक्षेप में, आदम के पाप के परिणामस्वरूप, सभी मनुष्यों को मृत्यु मिली।

ऐसा इसलिए था क्योंकि आदम के पाप करने के बाद या उसके बाद सभी ने पाप किया था। व्याख्यात्मक और धार्मिक मुद्दा इस प्रकार है। हम एक आदमी के पाप करने और सभी मनुष्यों के पाप करने का हिसाब कैसे देते हैं? श्लोक 12 इस सवाल का जवाब नहीं देता है।

इसका उत्तर निम्नलिखित श्लोकों की व्याख्या में निहित है। अंतिम वाक्य, क्योंकि सभी ने पाप किया, कठिन है क्योंकि, एक, संदर्भ सभी ने पाप किया की सामूहिक समझ की मांग करता है। अन्यथा, और इसलिए सभी ने पाप किया का कोई अर्थ नहीं है।

घुसपैठियों ने मृत्यु में पाप किया, आदम के पाप के माध्यम से दुनिया में प्रवेश किया, और इसलिए, परिणामस्वरूप, सभी मनुष्य मर गए। क्योंकि सभी ने व्यक्तिगत रूप से पाप किया? बल्कि, सभी मर गए क्योंकि उन्होंने आदम में पाप किया था। दूसरी ओर, कुछ लोग दावा करते हैं कि पॉल में हर जगह इसका अर्थ यह है कि सभी मनुष्य व्यक्तिगत रूप से पाप करते हैं।

क्रैनफील्ड और हेंड्रिक्सन कहते हैं कि यही मामला है। क्या यह एकमात्र अपवाद है? 5:13 और 14 बहुत कठिन हैं, और मैंने विकल्पों पर काम करते हुए कई छात्रों को सोने पर मजबूर कर दिया है। लेकिन अगर मैं व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र के लिए प्रतिबद्ध हूँ, तो मैं उन विकल्पों पर काम करूँगा जो हमें करने चाहिए।

यहाँ, 4, gar, एक व्याख्यात्मक खंड प्रस्तुत करता है। वेल्स ने कहा, किसी तरह, श्लोक 13 और 14 श्लोक 12 की व्याख्या करते हैं। मुझे कानून पढ़ना चाहिए क्योंकि अगर सभी पाप पाप किए जाते हैं, तो खंड छोड़ दिया जाता है।

इसीलिए अनुवादों में वहाँ एक बड़ा डैश लगाया गया है। क्योंकि पाप, वास्तव में, व्यवस्था दिए जाने से पहले भी संसार में था। लेकिन जहाँ व्यवस्था नहीं है वहाँ पाप नहीं गिना जाता।

फिर भी, आदम से लेकर मूसा तक मौत ने राज किया, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिनका पाप आदम के अपराध जैसा नहीं था, जो आने वाले का प्रतीक था। वाह! यहाँ व्यवस्था स्पष्ट रूप से मूसा की व्यवस्था को संदर्भित करती है।

यह सही है। पाप, वास्तव में, व्यवस्था दिए जाने से पहले दुनिया में था। कहानी के अंत में, वह मूसा से आदम के बारे में बात करता है, जो एक अच्छी बात है।

पद 14 की तुलना में, जो आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु के शासन की बात करता है, आदम के समय से लेकर आदम से मूसा को मूसा का कानून दिए जाने तक, पाप दुनिया में था। वास्तव में, पाप और मृत्यु, पद 14, दोनों ही नहीं गए थे। आदम से लेकर मूसा तक मनुष्य पाप करते रहे और मरते रहे।

अगला खंड यह जोड़ता है कि जब कोई कानून नहीं होता है तो किसी के खाते में पाप का आरोप नहीं लगाया जाता है। यहाँ नियमित स्थिति का एक बयान है, एक नाममात्र वर्तमान। पाप का आरोप नहीं लगाया जाता है।

यह सच है। यह तथ्यों का एक नियमित बयान है जहाँ कोई कानून नहीं है।

रोमियों 4:15 से तुलना करें। जहाँ कोई व्यवस्था नहीं है, वहाँ कोई अपराध नहीं है। रोमियों 5:13बी, जो मैंने अभी पढ़ा। जहाँ कोई व्यवस्था नहीं है, वहाँ पाप नहीं गिना जाता, जो बहुत ही समस्याजनक है।

इसके अर्थ के बारे में कम से कम पाँच दृष्टिकोण हैं। ओह! सामाजिक आक्षेप दृष्टिकोण।

पूर्ण अर्थ वाला दृष्टिकोण। फिर एक कानून वाला दृष्टिकोण था। सापेक्ष या तुलनात्मक अर्थ वाला दृष्टिकोण।

पाप और अपराध के बीच अंतर। सामाजिक आक्षेप दृष्टिकोण। मैथ्यू ब्लैक, न्यू सेंचुरी बाइबल, का मानना है कि पॉल, उद्धरण, सामाजिक आक्षेप की शैली में खुद के साथ या एक काल्पनिक प्रतिद्वंद्वी के साथ बहस कर रहा है।

मृत्यु सभी मनुष्यों पर आई, इसलिए सभी पाप हुए। फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ, मूसा के कानून दिए जाने तक, दुनिया में पाप था। हालाँकि, आप तर्क दे सकते हैं कि जहाँ कोई कानून नहीं था, वहाँ कोई पाप नहीं हो सकता था।

लेकिन पाप को आरोपित नहीं किया जा सकता और इसलिए उसे दंडित नहीं किया जा सकता। आप तब आपत्ति करते हैं जब कोई कानून नहीं होता। जो भी हो, आदम से लेकर मूसा तक मौत का बोलबाला रहा, जैसा कि मूसा से लेकर आगे तक रहा, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिनका पाप आदम के अपराध जैसा नहीं था।

बी, पूर्ण अर्थ दृष्टिकोण। हरमन रिडरबोस ने श्लोक 13 और 14 के तर्क से उद्धरण देते हुए लिखा है, पॉल यहाँ कानून दिए जाने से पहले की अवधि की अपील करता है, क्योंकि उस समय जीवित लोगों की मृत्यु को उनके अपने व्यक्तिगत पाप से नहीं समझाया जा सकता है, बल्कि इसका कारण आदम का पाप रहा होगा। तब भी पाप था, क्योंकि जब तक कानून नहीं आया, तब तक दुनिया में कोई पाप नहीं था।

हालाँकि, कानून की स्वीकृति, मृत्यु, अभी तक लागू नहीं हुई थी। क्योंकि जहाँ कोई कानून नहीं है, वहाँ कोई अपराध भी नहीं है, तुलना करें 4:15। और जब कोई कानून नहीं होता तो पाप नहीं लगाया जाता। फिर भी, उस समय भी, मृत्यु ने उन लोगों पर राज किया जिन्होंने आदम की तरह अपराध नहीं किया, यानी, जो आदम की तरह ईश्वरीय आज्ञा और उस पर दी गई स्वीकृति का सामना नहीं करते थे।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यह उनका व्यक्तिगत पाप नहीं था, बल्कि आदम का पाप और उसमें उनका हिस्सा था, जो उनकी मृत्यु का कारण था। तब एक कानून का दृष्टिकोण था। जॉन मुरे लिखते हैं, मेरा मतलब है, ये अच्छे लोग हैं।

उद्धरण, यह पॉल की शिक्षा के साथ या सामान्य रूप से शास्त्र के साथ संगत नहीं है, यह मानना कि पॉल का यहाँ मतलब यह है कि यद्यपि पाप हो सकता है, लेकिन इसे पाप के रूप में नहीं लगाया गया था, जहाँ कोई कानून नहीं है। यह 4:15 का खंडन करेगा। कोई कानून नहीं है, कोई अपराध नहीं है। अनुग्रह को उचित ठहराने के प्रावधानों के अलावा, जो इस आयत में नहीं हैं, जब पाप नहीं लगाया जाता है तो इसका मतलब है कि पाप मौजूद नहीं है।

इसका मतलब यह है कि वहाँ कानून भी रहा होगा। विचार यह है कि भले ही मूसा ने सिनाई में कानून की घोषणा नहीं की थी, फिर भी कानून था। यह इस तथ्य से पता चलता है कि पाप था।

अगर कोई व्यवस्था नहीं होती, तो कोई पाप नहीं होता। 4:15 के अनुसार, पाप केवल व्यवस्था के उल्लंघन के रूप में मौजूद है। और जहाँ पाप मौजूद है, वहाँ उसे उसी रूप में आरोपित किया जाना चाहिए जैसा वह है।

विलियम हेंडरसन इस बात से सहमत हैं, "सिनाई के कानून दिए जाने से पहले भी दुनिया में पाप था, जैसा कि इस तथ्य से पता चलता है कि आदम से लेकर मूसा तक की अवधि के दौरान पाप की सज़ा, मृत्यु सर्वोच्च थी।" इसलिए, यह स्पष्ट है कि आदम से लेकर मूसा तक की अवधि के दौरान भी पाप को ध्यान में रखा गया था। हालाँकि सिनाई का कानून और उसके स्पष्ट आदेश अभी तक अस्तित्व में नहीं थे, फिर भी कानून था।

यहाँ, प्रेरित निस्संदेह उस बारे में सोच रहा था जिसके बारे में उसने अपने पत्र में पहले लिखा था, हृदय पर परमेश्वर का नियम। वह सिर्फ़ आयत 2:14 और 15 देता है, और यह नियम जिसमें बेवजह अपराधियों के लिए मौत की सज़ा थी, वास्तव में लागू किया गया था। रोमियों 1:18 से 32 देखें।

यह कि कानून था, इसका अर्थ यह है कि पाप था। यदि कोई कानून नहीं होता, तो कोई पाप भी नहीं होता - सापेक्ष या तुलनात्मक दृष्टि से।

केल्विन का मानना है कि हम पद 13बी को पूरी तरह से नहीं मान सकते क्योंकि परमेश्वर ने आदम और मूसा के बीच पापियों को पाप का दोषी ठहराया था। कैन की सज़ा, जल प्रलय जिसने ज्ञात दुनिया को नष्ट कर दिया, सदोम का पतन और अंत में, मिस्रियों पर आई विपत्तियाँ इस बात की गवाही देती हैं कि परमेश्वर ने मनुष्यों के अधर्म को उनके ऊपर आरोपित किया है। यह सब केल्विन का उद्धरण है।

हालाँकि, अधिकांश भाग के लिए, वे अपने स्वयं के बुरे कामों में शामिल थे ताकि जब तक उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर न किया जाए, तब तक वे खुद पर कोई पाप न लगाएँ। इसलिए, जब पॉल जोर देता है कि कानून के बिना पाप नहीं लगाया जाता है, तो वह तुलनात्मक रूप से बोल

रहा है क्योंकि जब लोगों को कानून द्वारा कार्रवाई करने के लिए प्रेरित नहीं किया जाता है, तो वे आलस्य में डूब जाते हैं। उद्धरण बंद करें।

बाद में, कैल्विन इस उद्धरण के बारे में बात करते हैं, आगे के शब्द जिसमें यह कहा गया था कि जिनके पास कोई कानून नहीं था, वे एक दूसरे पर पाप नहीं लगाते थे। उद्धरण बंद करें।
क्रेनफील्ड लिखते हैं कि आरोपित न करने से, पॉल का मतलब यह नहीं है कि इसे पुरुषों के खाते में आरोपित किए जाने के अर्थ में नहीं गिना जाता है।

उनके खिलाफ गिना गया, आरोपित किया गया। इस तथ्य के लिए कि कानून की अनुपस्थिति की उस अवधि के दौरान लोग मर गए, आयत 14 स्पष्ट रूप से पर्याप्त रूप से दिखाती है कि, इस अर्थ में, उनका पाप वास्तव में पंजीकृत था। आरोपित नहीं किया गया, गिना नहीं गया, इसे सापेक्ष अर्थ में समझा जाना चाहिए, केवल उस तुलना में जो कानून मौजूद होने पर होती है।

क्या यह कहा जा सकता है कि व्यवस्था के अभाव में पाप की गणना नहीं की जाती या उस पर आरोप नहीं लगाया जाता? वह यूनानी भाषा का प्रयोग करता रहता है। जो लोग व्यवस्था के बिना रहते थे, वे निश्चित रूप से निर्दोष पापी नहीं थे, जैसा कि किसी ने उन्हें कहा है। वे जो थे और जो उन्होंने किया उसके लिए वे ही दोषी थे।

लेकिन व्यवस्था के आगमन के बाद से जो स्थिति बनी है, उसकी तुलना में कहा जा सकता है कि पाप व्यवस्था की अनुपस्थिति में था और पंजीकृत नहीं था क्योंकि यह पूरी तरह से स्पष्ट, स्पष्ट रूप से परिभाषित चीज़ नहीं थी जो इसकी उपस्थिति में बन गई। यह केवल व्यवस्था की उपस्थिति में, केवल इस्राएल और कलीसिया में ही है, कि पाप की पूरी गंभीरता दिखाई देती है और पापी की ज़िम्मेदारी हर परिस्थिति से अलग हो जाती है।

दृश्य पाँच। पाप और अपराध के बीच अंतर बताइए। सीएच डोड और मोफ़ैट इस अंश में पाप और अपराध के बीच अंतर बताते हैं।

उद्धरण, वह यहाँ पाप के व्यापक अर्थ और अतिचार या उल्लंघन के बीच एक सावधानीपूर्वक अंतर खींचता है, जो एक ज्ञात आदेश का एक स्वैच्छिक, जिम्मेदार, दोषी उल्लंघन है। पाप, वास्तव में, कानून की अनुपस्थिति में कभी नहीं गिना जाता है, अर्थात्, अपराध नहीं होता है, जहाँ उस चीज़ के विपरीत कार्य करने का कोई इरादा नहीं है जिसे सही माना जाता है। बाद की पीढ़ियों में, पुरुषों ने पाप किया लेकिन कई मामलों में, आदम की तरह उल्लंघन नहीं किया।

लेकिन यद्यपि कानून के अभाव में उनके पाप को कभी नहीं गिना गया, लेकिन वस्तुगत क्रम में पाप के घातक प्रभाव उन पर पड़े। यह वास्तव में एक मुश्किल विकेट है, जैसा कि क्रिकेट खिलाड़ी कहेंगे। मैं अगली पंक्ति पर जा रहा हूँ और चीजों को एक साथ लाने की कोशिश करूँगा और अपनी राय दूँगा।

हम कह सकते हैं कि हम निश्चित रूप से जान सकते हैं कि विवादित शब्द कैसे काम करते हैं, भले ही यह कहना कठिन हो कि उनका क्या मतलब है। लेकिन आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु

का शासन था, आयत 14। यहाँ, हम सीखते हैं कि पाप के प्रभाव व्यवस्था दिए जाने से पहले ही महसूस किए गए थे।

लोग मर गए। वास्तव में, आदम और मूसा के बीच के समय में घुसपैठिया मौत ने राजा के रूप में शासन किया। मृत्यु ने उन लोगों पर भी शासन किया, जिन्होंने आदम के अपराध की तरह पाप नहीं किया था।

शब्दकोश शब्दकोश व्याख्या करता है, BAGD 2, पृष्ठ 561, खंड का अर्थ बताता है, उद्धरण, आदम के अपराध की समानता का अर्थ है जैसे आदम ने किया, जिसने परमेश्वर के स्पष्ट आदेशों में से एक का उल्लंघन किया। यही वह है जो आदम ने बगीचे में किया था, आप देखिए, और यही वह है जो मूसा के कानून दिए जाने के बाद किया जाना संभव है। अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ से न खाने का निषेध केवल आदम और हव्वा को दिया गया था, और यह कानून मूसा के समय तक नहीं दिया गया था।

फिर भी, आदम और मूसा के बीच रहने वाले लोगों पर मौत का राज था, जिन पर ये स्पष्ट प्रतिबंध थे। आदम पर स्पष्ट प्रतिबंध था। तुम बगीचे के हर पेड़ का फल खा सकते हो, लेकिन अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल नहीं खा सकते।

निश्चित रूप से, तुम ऐसा नहीं करोगे, और तुम ऐसा करोगे, ये स्पष्ट आदेश और निषेध हैं। समय के बीच, आदम और मूसा, आदम और आज्ञाओं के दिए जाने के बीच, पाप करना अलग है। हम स्पष्ट निषेधों के बारे में नहीं जानते।

फिर भी, लोग मर गए। हम इस अर्थ तक पहुँच रहे हैं, जो आसान नहीं है। फिर भी, आदम और मूसा के बीच रहने वाले लोगों पर मृत्यु का राज था।

इस आयत की समझ बहुत हद तक पाँच इंद्रियों के साथ कठिन 13बी की समझ पर निर्भर करती है। रोमियों 5:14बी, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिनका पाप आदम के अपराध जैसा नहीं था, की विभिन्न प्रकार से व्याख्या की गई है। कैल्विन ने लिखा, उद्धरण, यह अंश आम तौर पर छोटे बच्चों के बारे में समझा जाता है, जो बिना किसी वास्तविक अपराध के दोषी होते हुए भी मूल पाप के कारण मर जाते हैं।

हालाँकि, उन्होंने लिखा, मैं इसे सामान्य रूप से उन सभी लोगों के संदर्भ में व्याख्या करना पसंद करता हूँ जिन्होंने कानून के बिना पाप किया, उद्धरण बंद करें। जॉन मुरे सहमत हैं, लेकिन यह इतना निश्चित नहीं है, हालाँकि, केवल शिशुओं को ही देखा जाता है। जो लोग विशेष रहस्योद्घाटन के दायरे से बाहर हैं, उन्हें इस श्रेणी से संबंधित माना जा सकता है।

उन्होंने उल्लंघन नहीं किया और आदम की तरह स्पष्ट रूप से आज्ञा प्रकट की। हालाँकि इस श्रेणी के वयस्कों ने प्रकृति के नियम के विरुद्ध पाप किया, 14:15 हृदय पर परमेश्वर के नियम की तुलना में, प्रेरित सभी पर मृत्यु के शासन को प्रस्तुत कर सकता है जैसे कि आदम के पाप की ओर इशारा करते हुए और उस आधार की आवश्यकता के रूप में जिस पर अब उसकी रुचि केंद्रित है, अर्थात्, आदम के पाप में सभी का पाप। दूसरे शब्दों में, अभी भी उद्धृत करते हुए,

जब पूर्व-मोज़ेक अवधि के सभी तथ्यों को ध्यान में रखा जाता है, तो सार्वभौमिक शासन की एकमात्र व्याख्या आदम के पाप में एकजुटता है।

मैं सहमत हूँ। मैं सहमत हूँ। आदम और मूसा की मौत का कोई हिसाब हो सकता है।

लोगों ने पाप किया और वे मर गए। पाप की मजदूरी मृत्यु है, रोमियों ने हमें बताया है, है न? 6:23. लेकिन पौलुस का तात्पर्य यह है कि यद्यपि आप मृत्यु का हिसाब दे सकते हैं, लेकिन आप मृत्यु के शासन का हिसाब नहीं दे सकते।

मौत के राज को बगीचे में आदम के स्पष्ट पाप से समझाया गया है। एस. लुईस जॉनसन लिखते हैं कि यथार्थवाद वह दृष्टिकोण है जो यह दर्शाता है कि हम वास्तव में आदम की कमर में हैं; हम वास्तव में शारीरिक रूप से उसके शरीर में मौजूद हैं। वह सिर्फ़ हमारा प्रतिनिधि नहीं है, बल्कि वह हमारा स्वाभाविक मुखिया है।

अब, मैं उन चीज़ों पर काम कर रहा हूँ जिन्हें हम बाद में प्रेरित करने जा रहे हैं। वह हमारा स्वाभाविक मुखिया है, इसमें कोई सवाल नहीं है। हम आदम और हव्वा से आए हैं।

लेकिन क्या उसका स्वाभाविक मुखियापन मूल पाप के काम करने का तरीका है? यथार्थवाद हाँ कहता है, एक यथार्थवादी आरोपण। यह हाँ कहता है। एस. लुईस जॉनसन, जो असहमत हैं और यथार्थवादी मुखियापन के दृष्टिकोण के बजाय प्रतिनिधि कैल्विनवादी दृष्टिकोण को मानते हैं, कहते हैं, एस. लुईस जॉनसन कहते हैं, यथार्थवाद रोमियों 14 और उसके अंतिम खंड को संभाल नहीं सकता।

और जिसके साथ यह शुरू होता है, यह दर्शाता है कि दूसरा खंड एक विशेष वर्ग को संदर्भित करता है, यहां तक कि उन लोगों को भी जिन्होंने पाप नहीं किया। पहले खंड में संदर्भित सामान्य वर्ग से अलग। दूसरा खंड शिशुओं या, मेरी भाषा को क्षमा करें, मूर्खों से बना है; यह करीबी काउंटर लगता है।

अगर शिशुओं का ख्याल है, तो प्रेरित ने इस अवधि को क्यों चुना? सबसे पहले, शिशुओं का सम्मान करें; यह हर अवधि में सच है, और कोई भी अवधि दूसरे से बेहतर उदाहरण नहीं है। यह सही है। यह अच्छा है।

पद 14 का अंतिम खंड कहता है कि आदम आने वाले व्यक्ति का प्रकार है। मैं खुद से आगे निकल रहा हूँ। और मुझे उन कठिन पदों के बारे में अपनी समझ को स्पष्ट करने की आवश्यकता है।

वास्तव में, मैं ऐसा करूँगा और जब हम अपना अगला सत्र लेंगे तो इस कठिन परिस्थिति में अन्य विषयों पर चर्चा करूँगा।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 15

है, मूल पाप, रोमियों 5:12-19, जारी।